नरेश शांडिल्य

कमियाँ हैं मुझमें लाख मैं कोई ख़ुदा नहीं
मैंने ये कब कहा है कि मैं बेवफ़ा नहीं

हाँ, सच के रास्ते से हटूँगा न मैं कभी
बेशक़ चढ़ा दो दार पे मुझको गिला नहीं

यारी है उससे मेरी, वो यारों का यार है
होगा बुरा वो फिर भी वो मुझसे बुरा नहीं

दिल माँगता रहा वो मेरा, दे के अपना दिल
अबतक कसक है मैंने उसे दिल दिया नहीं

उसने लिया जो मान कि क़ातिल है वो मेरा
इससे बड़ी तो और अब उसकी सज़ा नहीं

सुरजीत मान जलईया सिंह

खुशियों का संसार सम्हालेंगे दोंनों
एक दूजे का प्यार सम्हालेंगे दोंनों

अनुबन्धों की एक राह पर निकले हैं
आपस में किरदार सम्हालेंगे दोंनों

हर मुश्किल आसान बना लेंगे अपनी
दिल को अब दिलदार सम्हालेंगे दोंनों

फूलों की मुस्कान चुराने वालों से
मिलकर के गुलजार सम्हालेंगे दोंनों

एक शब्द से बनते रिश्ते - नाते हैं
शब्दों का अब सार सम्हालेंगे दोंनों

ISSN:2583-8849